

रॉबर्ट वेन्नॉय, ड्यूटेरोनॉमी, व्याख्यान 2

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वेन्नॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, और टेड हिल्डेब्रांट

जेईडीपी सिद्धांत और व्यवस्थाविवरण जारी

सी. जेईडीपी सिद्धांत के लिए व्यवस्थाविवरण की डेटिंग का महत्व 1. समीक्षा

ठीक है, यदि आप कक्षा व्याख्यानों की रूपरेखा को देखें, तो हमने रोमन I से शुरुआत की, और हमने ए और बी, "ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ" और "पेंटाटेच की उत्पत्ति के संबंध में वर्तमान सहमति" और हम सी के मध्य में थे, "जेईडीपी सिद्धांत के लिए व्यवस्थाविवरण की डेटिंग का महत्व।" अब, उस पर थोड़ा वापस आने के लिए, थोड़ी सी समीक्षा के माध्यम से, मैंने आपको पेंटाटेच के वेलहाउजेन के विश्लेषण के परिणामों में से एक का उल्लेख किया था, उन्होंने कई कानून कोडों को अलग किया था, और फिर उन्होंने उन कानून कोडों को जोड़ा था विभिन्न दस्तावेजों के साथ ताकि उसके पास निर्गमन 20-23 से एक वाचा संहिता हो, जिसे उसने जेई के साथ जोड़ा। और फिर उसके पास ड्यूटेरोनोमिक कोड था, जो निश्चित रूप से, स्रोत दस्तावेज़ डी से जुड़ा हुआ है। एक पवित्रता कोड [एच] और एक पुजारी कोड [पी] था। प्रीस्टली कोड स्रोत दस्तावेज़ पी से जुड़ा था; यह पवित्रता संहिता डी के समान समय के आसपास कहीं स्थानांतरित हुई। लेकिन मुद्दा यह है कि, आपको जेईडीपी प्रगति और इसके संबंध में, कानून कोड की प्रगति मिल गई है। हमने पिछले सप्ताह इस पर चर्चा की थी। डी कोड एक ऐसा कोड है जिसका कालानुक्रमिक काल 621 ईसा पूर्व पर आधारित है क्योंकि धारणा यह थी कि योशियाह के समय में मंदिर में पाई गई कानून की किताब व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी, और लगभग 621 ईसा पूर्व में लिखी गई थी। इसका महान विचार केंद्रीकरण था पूजा करना। वेलहाउजेन ने कहा कि इस ड्यूटेरोनोमिक कोड को केंद्रीकरण की आवश्यकता है, जबकि एक्सोडस में वाचा कोड वेदियों और पूजा केंद्रों की बहुलता की अनुमति देता है।

2. चालक का दृष्टिकोण: डी जेई के विस्तार और पवित्रता कोड के समानांतर के रूप में

मुझे लगता है कि मैंने आखिरी घंटे के अंत में ड्राइवर की व्यवस्थाविवरण टिप्पणी आपको पढ़ी है। ड्राइवर वेलहाउज़ेन का अनुयायी है। उन्होंने कहा, "जे, ई, एच और पी के तीन कोडों के साथ ड्यूटेरोनॉमी का अलग-अलग संबंध आम तौर पर इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है।" वह उस संबंध को देखता है जिसमें ड्यूटेरोनॉमी तीन कोडों के साथ जेई कानूनों के विस्तार के रूप में खड़ा है। अतः D, जेई का विस्तार है। "यह कई विशेषताओं में पवित्रता के नियम के समानांतर है।" पवित्रता संहिता के समानान्तर। "इसमें ऐसे कानूनों का संकेत है जो वास्तव में हमेशा एक जैसे नहीं होते, बल्कि पी के बाकी हिस्सों में संहिताबद्ध औपचारिक संस्थानों और अनुष्ठानों के समान होते हैं।" तो उनका कहना है कि इसमें उस चीज़ का संकेत है जो पी में संहिताबद्ध हो जाती है, लेकिन बहुत बाद तक संहिताबद्ध नहीं हुई थी।

अब यह सामान्य थीसिस है जिसे वेलहाउज़ेन द्वारा विकसित किया गया था और उस समय से कई लोगों द्वारा इसका पालन किया गया है। यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि इज़राइल के धार्मिक विचारों का विकासवादी विकास हुआ है। सिद्धांत के पीछे यही धारणा है। यह वास्तव में शुरुआती बिंदु है। आप मानते हैं कि इज़राइल की धार्मिक संस्थाएँ, प्रथाएँ और विचार, एक विकासवादी पैटर्न में विकसित हुए हैं, और फिर आप सामग्री को इस तरह से व्यवस्थित करते हैं जो उस कल्पित वृद्धि या विकास को दर्शाता है। यह वास्तव में पूरी संरचना के पीछे है। हम इस पर बाद में वापस आएंगे, खासकर जब हम व्यवस्थाविवरण और पूजा के केंद्रीकरण पर आएंगे। लेकिन फिलहाल, मैं चाहता हूँ कि आप इस पर ध्यान दें कि उस संपूर्ण जेईडीपी संरचना में, व्यवस्थाविवरण आधारशिला है। तो यह एकमात्र निश्चित बिंदु है, 621 ईसा पूर्व

3. वेलहाउज़ेन डीटी। दूसरी अवधि है, जे कानूनों पर निर्भर

वेलहाउज़ेन वास्तव में स्वयं कहते हैं कि व्यवस्थाविवरण आधारशिला है, उनके खंड *द प्रोलेगोमेना टू द हिस्ट्री ऑफ़ एंशिअंट इज़राइल में*, जो वह खंड था जिसने वास्तव में पुराने नियम के अध्ययन के पूरे पाठ्यक्रम को बदल दिया। पृष्ठ 32 और 33 पर, वह कहते हैं, "संविदा की पुस्तक के रूप में," जो कि वाचा संहिता होगी, "और संपूर्ण यहूदीवादी लेखन," सामान्य रूप से जे दस्तावेज़, "इतिहास में पहली पूर्व-भविष्यवाणी अवधि को प्रतिबिंबित करता है कल्टस. इसलिए

व्यवस्थाविवरण संघर्ष और संक्रमण की दूसरी अवधि की कानूनी अभिव्यक्ति है। तो आप देखिए, आप वाचा संहिता और जे दस्तावेज़ से व्यवस्थाविवरण की दूसरी अवधि में चले गए हैं। वह कहते हैं, "जे कानूनों पर ड्यूटेरोनॉमी की साहित्यिक निर्भरता के कारण ऐतिहासिक क्रम अधिक निश्चित है," इस प्रकार डी जे पर निर्भर है, "और कथाओं को स्वतंत्र रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है और यह एक स्वीकृत तथ्य है।

इससे यह विश्वास करना आसान हो जाता है कि श्रमिकों की खोज ने राजा योशिय्याह को स्थानीय अभयारण्यों को नष्ट करने का अवसर दिया, और यही व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी, जिसका मूल रूप से वर्तमान की तुलना में छोटे रूप में एक स्वतंत्र अस्तित्व रहा होगा। . केवल यही, कम से कम, पेंटाटेच की सभी पुस्तकों में से, एक चुने हुए स्थान पर बलि पूजा के प्रतिबंध को इतनी शक्तिशाली अभिव्यक्ति देता है। यहीं पर मांग अपनी आक्रामक नवीनता का एहसास कराती है और कानून निर्माता की पूरी प्रवृत्ति पर हावी हो जाती है।" वह आगे बढ़ता है और वह उस पर चर्चा करता है। लेकिन बाद में अपनी पुस्तक में, जैसा कि आप देखते हैं, उन्होंने उस प्रगति को स्थापित किया है, पृष्ठ 368, वह उस पहले अध्याय, *प्रोलेगोमेना टू द हिस्ट्री ऑफ़ एंशिअंट इज़राइल का उल्लेख करते हैं*। मैं कहूंगा कि यह एक ऐसी पुस्तक है जिसने संभवतः पिछले 500 वर्षों में किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में पुराने नियम के अध्ययन के दृष्टिकोण में अधिक परिवर्तन किया है।

4. पंथ का केंद्रीकरण

पृष्ठ 368 पर, वह कहते हैं, "मैं हमेशा पंथ के केंद्रीकरण पर वापस जाता हूँ और इससे विशेष मतभेदों का निष्कर्ष निकालता हूँ।" योशिय्याह द्वारा 621 ईसा पूर्व का केंद्रीकरण, यही उनका केंद्र बिंदु है। वह कहते हैं, "मैं हमेशा उस पर वापस जाता हूँ और उसमें से विशेष भिन्नताएं निकालता हूँ। मेरी पूरी स्थिति मेरे पहले अध्याय में निहित है। उनका पहला अध्याय वह है जहां वह उस प्रगति की रूपरेखा बताते हैं। "वहां मैंने उस चीज़ को स्पष्ट प्रकाश में रखा है जो इज़राइली इतिहास के लिए इतना महत्वपूर्ण है, अर्थात्, पूजा के महान कायापलट में भविष्यवाणी पार्टी द्वारा ली गई भूमिका।" "पूजा के महान कायापलट" से उनका तात्पर्य एक केंद्रीकृत अभयारण्य में परिवर्तन है। यही उनके संपूर्ण सिद्धांत का मूलमंत्र बन जाता है। वह कहते हैं, "मैं हमेशा उस पर

वापस जाता हूँ।"

5. जेईडीपी का अनुसरण करने वाले अन्य विद्वान: Deut. 621 ईसा पूर्व की तारीख के आधार के रूप में

अब, मैं आपको पुराने नियम के कुछ अन्य विद्वानों की कुछ टिप्पणियाँ देना चाहता हूँ जो दर्शाती हैं कि यह न केवल वेलहाउज़ेन की प्रणाली के लिए, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी, जिन्होंने इसमें उनका अनुसरण किया है, कितना महत्वपूर्ण है। वॉल्यूम *द ओल्ड टेस्टामेंट एंड मॉडर्न स्टडी में*, जो 1951 में प्रकाशित एचएच रोवले द्वारा संपादित ओल्ड टेस्टामेंट अध्ययन के विभिन्न पहलुओं पर निबंधों का एक संग्रह है, इस पुस्तक में जीडब्ल्यू एंडरसन का "इजरायल का धर्म" पर लेख है। पृष्ठ 283 पर, उस लेख, "हिब्रू धर्म" में, वे कहते हैं, "किसी भी बिंदु पर कालक्रम की वेलहाउज़ेन प्रणाली की आधारशिला, ड्यूटेरोनॉमी की तारीख और प्रकृति के संबंध में संघर्ष इतना तीव्र नहीं रहा है।" वह ड्यूटेरोनॉमी की तारीख को कालक्रम की वेलहाउज़ेन प्रणाली की आधारशिला के रूप में बोलते हैं। उनका कहना है कि किसी भी बिंदु पर संघर्ष इतना तीव्र नहीं रहा। "अगर यहां गंभीर अनिश्चितता है, तो सिद्धांत की पूरी संरचना कमजोर हो गई है और ढह सकती है।" यदि आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के माध्यम से उस 621 तारीख को हिला सकते हैं, तो एंडरसन जो कह रहा है, वह पूरा सिद्धांत ध्वस्त हो जाएगा।

एचएच राउली, जो इस पुस्तक के संपादक हैं, ने अपनी छोटी पुस्तक *द ग्रोथ ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट लिखी*, जो 1950 में प्रकाशित हुई और कई बार पुनर्मुद्रित हुई। पृष्ठ 29 पर, वह कहते हैं, "इसलिए पेंटाट्यूचल आलोचना में ड्यूटेरोनॉमी की संहिता का बहुत महत्व है क्योंकि मुख्य रूप से इसके संबंध में ही अन्य दस्तावेज़ दिनांकित होते हैं। इसके अलावा, उस कोड को किसी भी अन्य की तुलना में अधिक संभावना के साथ अधिक सटीक रूप से दिनांकित किया जा सकता है, क्योंकि यह उच्चतम स्तर की संभावना है कि जिस कानून की किताब पर जोशिया का सुधार आधारित था वह ड्यूटेरोनॉमी की किताब थी और यह किताब पहली बार सार्वजनिक रूप से ज्ञात हुई थी उस समय।" फिर से, आप देखिए, यह केंद्रीय है क्योंकि इसके संबंध में अन्य दस्तावेज़ दिनांकित हैं।

ओटो ईसफेल्ट, जिन्होंने इसे लिखा है *द ओल्ड टेस्टामेंट: एन इंट्रोडक्शन*, ओल्ड टेस्टामेंट

परिचय का काफी मानक उपचार, 1965 में प्रकाशित, पृष्ठ 171 पर, वे कहते हैं: 'डी वेट, जिन्होंने 1805 के अपने *निबंध क्रिटिका में*, इस थीसिस को बनाए रखा है कि व्यवस्थाविवरण है एक कार्य जो पेंटाटेच की पिछली पुस्तकों से भिन्न है और एक बाद के लेखक से उत्पन्न हुआ है, इस प्रकार व्यवस्थाविवरण के बारे में इसकी खोज के समय से बहुत पहले नहीं, अर्थात् 621 ईसा पूर्व की उत्पत्ति हुई थी। इस सुझाव के द्वारा, व्यवस्थाविवरण की उत्पत्ति का सटीक समय स्थापित किया गया था, और एक निश्चित बिंदु की खोज की गई, जिसके द्वारा पेंटाटेच के अन्य घटक भागों की आयु भी निर्धारित की जा सकती थी। इस प्रकार डी वेट की थीसिस ने पेंटाट्यूचल आलोचना को आर्किमिडीज़ का एक बिंदु प्रदान किया जिससे वह खुद को चर्च और आराधनालय परंपरा के बंधन से मुक्त करने के लिए संलग्न कर सके। वह क्या है? यह लेखकत्व का मोज़ेक विचार है, "और इसके स्थान पर पेंटाटेच और उसके भागों की एक वैकल्पिक डेटिंग रखी गई है। यह सच है कि डी वेट के निर्णय से आवश्यक निष्कर्ष धीरे-धीरे ही निकाले गए थे; उनका स्वयं यह मानना था कि जिस स्रोत को हम P कहते हैं, वह D से पुराना है। देखिए, अनुक्रम कुछ ऐसा था जिसे सुलझाने में काफी समय लग गया। वेलहाउज़ेन ने इसे उसी क्रम में रखा है जिस क्रम में यह वर्तमान में है, जहाँ P बाद में आता है। लेकिन वह आर्किमिडीयन बिंदु वही है जिसे ईसफेल्ड ने यहां ड्यूटेरोनॉमी लिंक की इस थीसिस को जोसियन तिथि 621 ईसा पूर्व की तारीख के साथ बताया है।

6. 1928 जेबीएल वॉल्यूम ड्यूट पर। एवं 621 ई.पू. तिथि

अब, यह काफी सशक्त शब्दावली है। इस पर कई लेख हैं, और ये मेरे पास आपकी ग्रंथ सूची में हैं। यदि आप उस ग्रंथ सूची के पृष्ठ 1 के नीचे "परिचय और आलोचना" के अंतर्गत और अगले पृष्ठों पर नज़र डालें, तो आप देखेंगे कि पृष्ठ 2 पर जी. डाहल का एक लेख है, *द केस फॉर द करंट एक्सेप्टेड डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी*, *जर्नल ऑफ़ बाइबिलिकल लिटरेचर* में, खंड 47, 1928। जूलियस ए. बेवर की एक पुस्तक, *द केस फॉर द अर्ली डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी*, *जेबीएल* 47, 1928 भी है। और फिर, अगले पृष्ठ पर, हेल्बी पैटन की एक पुस्तक है, *ड्यूटेरोनॉमी की पोस्ट-एक्सिलिक उत्पत्ति का मामला*, *जेबीएल* 47, 1928। दूसरे शब्दों में, उस वर्ष, 1928 के लिए *जेबीएल* के उस खंड में ड्यूटेरोनॉमी की तारीख पर इस प्रश्न पर तीन लेख थे। और आप बेवर के साथ देखते हैं,

आपको प्रारंभिक तिथि का मामला मिलता है; डाहल के साथ, वर्तमान में स्वीकृत तिथि का मामला, जो 621 की वेलहाउज़ेन तिथि होगी; और फिर पैटन के साथ, निर्वासन के बाद का मामला, व्यवस्थाविवरण को बहुत बाद में निर्वासन के बाद की अवधि में धकेल देता है। अब, उन लेखों के शीर्षकों से ऐसा लगता है कि आप किसी मामले में जल्दी तारीख, 621 तारीख और देर से तारीख के लिए बहस कर रहे हैं। यह कुछ हद तक भ्रामक है, क्योंकि ये सभी लोग 621 की वेलहाउज़ेन तिथि को स्वीकार करते हैं। इसलिए जब वे प्रारंभिक तिथि के मामले के बारे में बात कर रहे हैं, तो वे मामले को बता रहे हैं और फिर इसकी आलोचना कर रहे हैं। या देर की तारीख का मामला, वे उस मामले को दे रहे हैं और फिर इसकी आलोचना कर रहे हैं और फिर इस बारे में बात कर रहे हैं कि वे उस तारीख को वेलहाउज़ेन तारीख के रूप में कैसे स्वीकार करते हैं। लेकिन वे लेख उस बहस का बहुत अच्छा सारांश हैं जो लगभग साठ साल पहले चल रही थी। बहस अभी भी जारी है, लेकिन आप वापस जा सकते हैं और उन तीन लेखों को देख सकते हैं और कुछ मुद्दों का बहुत अच्छा परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया क्योंकि उन लेखों में से एक में, डाहल द्वारा लिखित, *द केस फॉर द प्रेजेंट एक्सेप्टेड डेट*, जो वास्तव में वेलहाउज़ेन दृष्टिकोण का बचाव है... वह अपने लेख के पृष्ठ 360 पर कुछ टिप्पणियाँ करता है, और वह इसी प्रश्न के बारे में यह कहते हैं। वह कहते हैं, "पवित्रशास्त्र के विद्यार्थी के लिए यह अच्छा है कि वह कभी-कभी आसन्न आलोचनात्मक विश्वास के कारणों को दोहराए।" वहाँ पवित्रशास्त्र की व्याख्या की तरह। "यह व्यवस्थाविवरण के मामले में सबसे सशक्त रूप से सच है। सर्वसम्मत सहमति से, इस पुस्तक को पुराने नियम के इतिहास, साहित्य और धर्म के अध्ययन में एक केंद्रीय, महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हिब्रू इतिहास के पाठ्यक्रम का नैतिक पुनर्निर्माण, जो मध्यस्थता के लिए महत्वपूर्ण बाइबिल विद्वता की सर्वोच्च सेवा और विवाह रहा है, इसकी वैधता सबसे पहले व्यवस्थाविवरण की हमारी डेटिंग की आवश्यक शुद्धता पर निर्भर करती है। वह कहते हैं, यह महत्वपूर्ण संरचना, "सबसे पहले इसकी वैधता व्यवस्थाविवरण की हमारी डेटिंग की आवश्यक शुद्धता पर निर्भर करती है। विशेष रूप से, मूसा की तथाकथित पांचवीं पुस्तक की पहचान, 2 किंग्स 22 में उल्लिखित कानून की पुस्तक के साथ, आम तौर पर बहुत ही मानी जाती है," और यहां एक और वाक्यांश है, "पुराने नियम के शोध के

संग्रह का मुख्य आधार।" "पुराने नियम के शोध का मुख्य आधार व्यवस्थाविवरण की कालनिर्धारण है। ईसफेल्ड ने इसे आर्किमिडीयन बिंदु कहा है, और डाहल ने इसे "पुराने नियम के अनुसंधान के संग्रह का मुख्य आधार" कहा है। "विद्वानों की कई पीढ़ियों के धैर्यपूर्वक और निरंतर परिश्रम से हासिल की गई इस खोज को त्यागना, या यहां तक कि गंभीरता से सवाल उठाना, पूरी महत्वपूर्ण स्थिति का पुनः समायोजन शामिल होगा जो क्रांतिकारी से कम नहीं है।" अब यह किसी ऐसे व्यक्ति की ओर से आ रहा है जो इस दृष्टिकोण का बचाव कर रहा है लेकिन यह स्वीकार कर रहा है कि पूरी बात व्यवस्थाविवरण की तारीख पर निर्भर करती है। और उस पृष्ठ पर एक फुटनोट में, वह कुछ अन्य लोगों का हवाला देता है। *पुराने नियम के साहित्य के* जॉर्ज फुट मूर कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण एक निश्चित बिंदु है, जिसके संदर्भ में पेंटाटेच में अन्य स्तरों की आयु कम से कम अपेक्षाकृत रूप से निर्धारित की जा सकती है।" फिर हम देखते हैं कि ग्राहम, *जर्नल ऑफ रिलिजन*, 1927 में कहते हैं, "तब यह ग्रीनविच का एक प्रकार का मध्याह्न रेखा बन जाता है, कालानुक्रमिक और मनोवैज्ञानिक संबंध में एक निश्चित बिंदु जिसके साथ अन्य साहित्य को प्रतिस्थापित किया जा सकता है।" तो वहाँ आपको एक और वाक्यांश मिलता है।

छात्र: "क्या डाहल इन्हें उद्धृत कर रहा है?"

वर्नाय: "डाहल इन अन्य लोगों को उद्धृत कर रहे हैं। तो आपको शेष महत्वपूर्ण संरचना, जेईडीपी संरचना के संबंध में ड्यूटेरोनॉमी के कार्य की तारीख के संदर्भ में यह "आर्किमिडीयन बिंदु," "पुराने टेस्टामेंट अनुसंधान के आर्क का मुख्य आधार" और "ग्रीनविच का मेरिडियन" मिल गया है। फिर वह एक जर्मन को उद्धृत करता है, लेकिन वह उसे यहां जर्मन में उद्धृत करता है, लेकिन यदि आप इसका अनुवाद करते हैं, तो यह होगा, यह जर्मन साथी कहता है, "ड्यूटेरोनॉमी के साथ संपूर्ण महत्वपूर्ण संरचना खड़ी होती है या गिर जाती है, जिसे पिछले दशकों के दौरान सावधानीपूर्वक बनाया गया था 1900 का दशक।"

7. देउत की डेटिंग का महत्व. 621 ईसा पूर्व और अन्य विकल्पों पर

तो इन सबके अध्ययन के लिए मुझे समय लगने का कारण यह है कि मैं आपको व्यवस्थाविवरण की तारीख के महत्व, महत्ता के बारे में समझाने का प्रयास करूँ। मेरा मतलब है,

यदि 621 में ड्यूटेरोनॉमी को डेटिंग करना एक गलती है, तो आपने इस पूरे विस्तृत आलोचनात्मक सिद्धांत को कमजोर कर दिया है, और ये लोग इसे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण लगता है कि व्यवस्थाविवरण की तिथि का प्रश्न अभी भी एक सुलझा हुआ प्रश्न नहीं है। इस पर आज भी और यहाँ तक कि आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी बहुत बहस चल रही है। जैसा कि इन लेखों में मैंने आपको बताया है, कुछ आलोचनात्मक विद्वानों का कहना है कि इसे पहले स्थानांतरित किया जाना चाहिए, कुछ का कहना है कि इसे बाद में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। इसलिए आलोचनात्मक विद्वता की अकादमिक दुनिया में भी इस बात पर बहस चल रही है कि व्यवस्थाविवरण को कहाँ रखा जाना चाहिए। जहाँ तक इंजीलवादियों का सवाल है, इसे वहाँ वापस ले जाया जाना चाहिए जहाँ यह खुद को दर्शाता है: मोज़ेक युग। इसलिए अभी भी काफी चर्चा चल रही है। और पिछले लगभग 50 वर्षों में, वेलहाउज़ेन स्थिति को विभिन्न दिशाओं से चुनौती दी गई है। वे लेख उसी का प्रतिबिंब हैं। जैसा कि डाहल उसी लेख में कहते हैं, इसके दूसरे पृष्ठ में, वे कहते हैं, "आलोचनात्मक विद्वानों को चतुराई से किसी ने नरभक्षियों के एक समूह के रूप में चित्रित किया है जो एक दूसरे को खाकर खुद को ताज़ा करते हैं।" यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसका अंदाज़ा आपको अक्सर इस तरह के प्रश्नों के लोकप्रिय समाधानों में मिलता है, जहाँ ऐसा लगता है कि 621 एक स्थापित तथ्य है; यह बहस का विषय नहीं है। लेकिन आप पत्रिकाओं और तकनीकी लेखों को देखें, तो आप पाएंगे कि यह सारी बहस इधर-उधर चलती रहती है, यहाँ तक कि आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी। इसलिए निर्वासन के बाद की तारीखों के समर्थक रहे हैं (हम इसे बाद में देखेंगे, हम इस पर विचार करेंगे); 621 से पहले की तारीख के समर्थक रहे हैं, लेकिन मूसा से बाद की; दूसरे शब्दों में, इसे कुछ हद तक पीछे धकेलना, लेकिन बिल्कुल मूसा तक नहीं। इसलिए सभी प्रकार के दृष्टिकोण रहे हैं।

निःसंदेह, साथ ही, हमेशा ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्होंने मोज़ेक तिथि का बचाव किया है। मेरा मतलब है, इस चर्चा के दौरान, मोज़ेक तिथि के लिए तर्क देने वाले लोगों का अच्छा प्रतिनिधित्व रहा है। इसके अंत में, चल रही इस सारी बहस के बारे में, डाहल कहते हैं, "तो फिर, यहां दो निश्चित समस्याएं हैं जो अभी भी समाधान की प्रतीक्षा कर रही हैं। वे पुराने नियम की आलोचना के लिए एक चुनौती के रूप में खड़े हैं। यदि अतीत का अनुभव कोई मानदंड है, तो ये समस्याएं भी समय आने

पर अपना समाधान ढूँढ लेंगी।" यशायाह 48:22 के शब्द (बहुत स्वतंत्र रूप से अनुवादित), "कोई शांति नहीं है," यहोवा कहता है, "दुष्टों के लिए कोई शांति नहीं है," यशायाह 48 में यही पढ़ा गया है, लेकिन बहस जारी है।

द्वितीय. व्यवस्थाविवरण ए का लेखकत्व और तिथि। आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सर्वेक्षण

ठीक है, वह रोमन I के तहत सी है, "जेईडीपी सिद्धांत के लिए ड्यूटेरोनॉमी की डेटिंग का महत्व।" मुझे नहीं लगता कि मैं इस बात पर ज्यादा जोर दे सकता हूँ कि यह कितना महत्वपूर्ण है। रोमन II "द ऑथरशिप एंड डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी: ए सर्वे ऑफ़ क्रिटिकल अप्रोचेज़" है। मैंने यहां जो किया है वह बस पहले वेलहाउज़ेन स्कूल के सिद्धांत को लिया गया है, जिसका मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ और फिर बी "विभिन्न दिशाओं से क्लासिक वेलहाउज़ेन स्थिति के लिए चुनौतियां" है। और 1. निर्वासन के बाद का है; 2. तारीख 621 से पहले की है लेकिन राजशाही काल के दौरान; 3. पूर्व-राजशाही डेटिंग लेकिन गैर-मोज़ेक, बस जे से थोड़ा पहले पीछे चलते हुए; और 4. मोज़ेक तिथि के समर्थक। तो हम व्यवस्थाविवरण की तिथि के इन विभिन्न दृष्टिकोणों का एक सर्वेक्षण प्राप्त करना चाहते हैं।

ए. वेलहाउज़ेन स्कूल का सिद्धांत

तो ए, "वेलहाउज़ेन स्कूल का सिद्धांत: मैंने पहले ही इसकी बुनियादी विशेषताओं और सामान्य रूप से जेईडीपी सिद्धांत के लिए 621 में दिनांकित ड्यूटेरोनॉमी के महत्व को संक्षेप में प्रस्तुत कर दिया है। लेकिन शायद मुझे कुछ और विवरण भरने दीजिए। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, वेलहाउज़ेन ने ड्यूटेरोनॉमी को 2 किंग्स 22 और उसके बाद में संदर्भित कानून की किताब माना है, जहां हमें राजा योशियाह के समय की कहानी मिलती है। तो वह कानून की किताब 2 राजा 22 में पाई जाती है ; और फिर, इसके अलावा, वह कहता है कि पुस्तक योशियाह के समय में लिखी गई थी।

जिस समय वेलहाउज़ेन ने अपने सिद्धांत को आगे बढ़ाया, सामान्य दृष्टिकोण यह था कि मंदिर में पाई गई कानून की किताब संपूर्ण पेंटाटेच थी, न कि केवल व्यवस्थाविवरण। इसलिए जिस

समय वेलहाउज़ेन ने अपने विचार आगे बढ़ाए, सामान्य विचार यह था कि यह संपूर्ण पेंटाटेच था जो योशियाह के समय में पाया गया था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह कहना कि यह केवल व्यवस्थाविवरण था, आवश्यक रूप से कुछ ऐसा है जिस पर तर्क करने की आवश्यकता है। हो सकता है कि। यह कहना कठिन है कि यह संपूर्ण पेंटाटेच था या केवल व्यवस्थाविवरण। यह विचार कि यह केवल व्यवस्थाविवरण था, कोई नया विचार नहीं था; कुछ चर्च फादरों का मानना था कि कानून की किताब व्यवस्थाविवरण है, उनमें से अथानासियस, जेरोम और क्रिसोस्टॉम शामिल थे। उनका मानना था कि यह व्यवस्थाविवरण था, लेकिन उन्होंने मोज़ेक लेखकत्व से इनकार नहीं किया। यही अंतर की बात होगी।

1. डेवेट योगदान

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, वेलहाउज़ेन का विचार है कि यह व्यवस्थाविवरण था लेकिन यह योशियाह के समय में भी लिखा गया था। उन्होंने इसे विल्हेम एचएम डी वेट से प्राप्त किया। डी वेट ने यह विचार विकसित किया था कि ड्यूटेरोनॉमी जोशिया के समय के आसपास लिखी गई थी, और इसके लिए उनके मूल तर्क दो थे। पहला, उन्होंने ऐतिहासिक पुस्तकों में कहा था, उन ग्रंथों के अपवाद के साथ जो स्पष्ट रूप से बाद की तारीख के हैं, ऐतिहासिक पुस्तकों में योशियाह के समय से पहले के व्यवस्थाविवरण का कोई निशान नहीं है। दूसरे शब्दों में, यहोशू, न्यायाधीश, शमूएल, राजा, योशियाह के समय तक, उनका कहना है कि योशियाह के समय से पहले व्यवस्थाविवरण के किसी भी प्रभाव का कोई निशान नहीं है। लेकिन फिर, आप देखिए, वह यह कहकर इसे प्रमाणित करता है कि "उन पाठों को छोड़कर जो स्पष्ट रूप से बाद की तारीख के हैं।" दूसरे शब्दों में, आप देखें कि वह क्या कह रहा है, आपको योशियाह के समय तक की ऐतिहासिक पुस्तकों में ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव नहीं मिलता है। यदि आपको ऐसा कुछ मिलता है जो ऐसा लगता है कि यह व्यवस्थाविवरण प्रभाव है, तो आप जानते हैं कि यह एक बाद का सम्मिलन है जिसे व्यवस्थाविवरण के लेखन के बाद उस पाठ में वापस डाला गया है। उन्होंने कहा, "ऐतिहासिक पुस्तकों में, उन ग्रंथों को छोड़कर जो स्पष्ट रूप से बाद की तारीख के हैं।" क्यों? वे स्पष्ट रूप से

किसी अन्य तिथि से क्यों हैं? क्योंकि वे व्यवस्थाविवरण को दर्शाते हैं। तो, वह दावा करता है, "योशियाह के समय से पहले व्यवस्थाविवरण का कोई निशान नहीं है।" यह उनका पहला तर्क है।

दूसरा तर्क: वह कहते हैं, "2 किंग्स 22 की सामग्री इस बात की पुष्टि करती है कि व्यवस्थाविवरण ध्यान में है।" इससे उनका तात्पर्य यह है कि योशियाह के सुधार की प्रकृति व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के महत्व को दर्शाती है। तो उनका कहना है कि 2 किंग्स 22 की सामग्री इस बात की पुष्टि करती है कि व्यवस्थाविवरण ध्यान में है। अब, ये दो मुख्य तर्क थे। डी वेट ने अनुमान लगाया कि शायद हिल्कियाह, हुल्दा, या शाफ़ान पुस्तक के लेखकत्व में शामिल थे। अब हिल्कियाह, हुल्दा और शापान कौन थे?

विद्यार्थी: एक भविष्यवक्ता।

वन्नॉय: हिल्कियाह एक पुजारी था। हुल्दा कौन था?

छात्र: शायद एक भविष्यवक्ता।

वन्नॉय: वह एक भविष्यवक्ता थी, जिसे किताब मिलने के बाद उसके पास ले जाया गया था। शापान वह था जिसने इसे राजा योशियाह को पढ़कर सुनाया था; वह योशियाह की सेवा में मुंशी था। आप देखिए, योशियाह के समय में कानून की पुस्तक की "खोज" से तीन व्यक्तियों के नाम जुड़े हुए हैं। इसलिए उन्होंने अनुमान लगाया कि याजक हिल्कियाह, भविष्यवक्ता हुल्दा और शास्त्री शापान पुस्तक के लेखकत्व में शामिल थे। तो, आप इसके बारे में निश्चित नहीं हो सकते, लेकिन यह सुझाव है, ताकि, 621 में कानून की किताब की खोज से अविभाज्य रूप से संबंधित यह है कि यह इसकी खोज के समय के बारे में लिखा गया था। इसलिए, यह एक जानबूझकर किया गया धोखा, या "पवित्र धोखाधड़ी" थी। आप जानते हैं, यह वास्तव में पाया नहीं गया था, इसे केवल पाए जाने के रूप में दर्शाया गया था, इसे प्रामाणिकता और अधिकार देने के लिए मोज़ेक के रूप में दर्शाया गया था। तो, हमें यह पवित्र धोखाधड़ी का विचार मिलता है, जहां लोगों को यह सोचकर धोखा दिया जाता है, "यहां वह कानून है जो भगवान ने मूसा को दिया था।"

अब यह एक कट्टरपंथी दृष्टिकोण है, यह सोचना कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में जिस प्रकार की सामग्री है, वह पुस्तक ऐसे लोगों द्वारा लिखी गई हो सकती है जो इतने धोखेबाज हैं कि धोखाधड़ी से ऐसी किसी चीज़ को प्रामाणिक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं जबकि ऐसा नहीं था।

लेकिन कुछ लोगों को लगा कि इसमें एक निश्चित समस्या है, इसलिए आप कह सकते हैं कि एक अधिक उदारवादी दृष्टिकोण है, जिसे कुछ लोगों ने आगे बढ़ाया है जो अन्यथा वेलहाउज़ेन/डी वेट स्थिति से सहमत थे। और उन्होंने कहा कि शायद व्यवस्थाविवरण योशिय्याह के समय से पहले लिखा गया था, और इसे हिजकिय्याह या मनश्शे के समय में वापस ले जाएं, जो इसे बहुत लंबे समय तक पीछे नहीं ले जाएगा, लेकिन, वे कहेंगे, यह था संभवतः हिजकिय्याह या मनश्शे के समय में लिखा गया था और फिर वास्तव में मनश्शे के समय में धर्मत्याग के भयानक काल के दौरान खो गया। तब यह वास्तव में योशिय्याह के समय में पाया जा सकता था। लेकिन उन सभी विचारों में, यह माना जाता है कि व्यवस्थाविवरण को पहली बार योशिय्याह के तहत सार्वजनिक रूप से कानून के रूप में घोषित किया गया था।

अब, इस दृश्य के बारे में एक और टिप्पणी, जो मुझे लगता है, दिलचस्प है। इस आम सहमति के पीछे यह पूर्वधारणा थी कि 2 राजाओं 22 और 23 की कहानी ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है। क्योंकि, आप देखिए, यह तर्क 2 राजाओं 22 और 23 का विवरण है और योशिय्याह के सुधार का वर्णन इस प्रकार का है जो हमें यह निष्कर्ष निकालने पर मजबूर करता है कि व्यवस्थाविवरण उस सुधार के लिए प्रेरणा रहा होगा। खैर, फिर, यह माना जाता है कि यह खाता विश्वसनीय है। यदि आप 2 राजाओं 22 और 23 की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हैं, तो आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के लिए निश्चित ऐतिहासिक तारीख का लिंक खो देते हैं। अब दिलचस्प विडंबना यह है: व्यवस्थाविवरण एक पवित्र धोखाधड़ी है लेकिन राजाओं को ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय होना चाहिए।

विद्यार्थी: “जहाँ तक विश्वसनीयता की बात है, यदि यह एक जानबूझकर किया गया धोखा था, तो फिर यह विश्वसनीय कैसे हो सकता है? मैं निश्चित रूप से नहीं जानता कि विश्वसनीय से आपका क्या मतलब है। यदि आपने कहा होता, ‘यह एक जानबूझकर किया गया धोखा था,’ तो यह वास्तव में विश्वसनीय नहीं होता।

वात्रॉय: ठीक है, मेरा मतलब है, और मैं वास्तव में इसे इस बहस से कुछ ले रहा हूँ, जोशिया के तहत सुधार के चरित्र का वर्णन है, जिस तरह से यह वास्तव में हुआ था। यदि आप यह नहीं

मानते हैं कि विवरण विश्वसनीय है, तो आपके पास यह कहने का कोई आधार नहीं है कि व्यवस्थाविवरण पाया गया था, इस अर्थ में।

डाहल कहते हैं, पृष्ठ 376 पर, उसी लेख में जो मैंने आपसे पहले पढ़ा था, वह यह कहते हैं: "इन अध्यायों की ऐतिहासिकता को कई विद्वानों द्वारा गंभीर रूप से चुनौती दी गई है," यानी 2 राजा 22 और 23; "ऐतिहासिकता को कई विद्वानों ने गंभीरता से चुनौती दी है। उनके ऐतिहासिक मूल्य के प्रश्न के उत्तर पर बहुत कुछ निर्भर करता है, लेकिन सब कुछ नहीं। इस विषय पर जो भी संदेह हो सकता है, वह 2 राजाओं 22 और उसके बाद की ऐतिहासिकता के प्रश्न को अलग करने से काम नहीं आएगा, जैसे कि उनकी गवाही अकेली और असमर्थित थी। हम पहले ही देख चुके हैं कि व्यवस्थाविवरण को साहित्यिक और धार्मिक विकास के इस विशेष क्षेत्र में रखने के लिए प्रचुर, स्वतंत्र साक्ष्य मौजूद हैं।" बाद में वे कहते हैं, "लेकिन, वास्तव में, रिकॉर्ड की आवश्यक विश्वसनीयता में हमारा विश्वास साहित्यिक आलोचना द्वारा पूरी तरह से उचित है। ऐसा लगता है कि किंग्स के संपादक ने यहां एक पुराने लिखित स्रोत का उपयोग किया है, जो उनके अपने लेखन से शैली और विचार में स्पष्ट रूप से भिन्न है। इसे संभवतः राजाओं के निर्वासन-पूर्व इतिहास में शामिल किया गया था और संभवतः जोशिया के समकालीन द्वारा, निश्चित रूप से, किसी भी मामले में, 586 की आपदा से पहले लिखा गया होगा। तथ्य यह है कि किंग्स की पुस्तक, अपने अंतिम रूप में, बाद की तारीख का है, जरूरी नहीं कि इन अध्यायों में दिए गए वृत्तांत पर एक आविष्कार के रूप में मुहर लगाई जाए, न ही हुलदा सामग्री का स्पष्ट कामकाज मुख्य कहानी की स्पष्ट गंभीरता पर हावी है। अति-परिष्कृत संशयवाद जैसी कोई चीज़ होती है।"

अब दिलचस्प बात यह है कि यहां यह आलोचनात्मक विद्वान उसी तरह के लोगों के खिलाफ 2 राजाओं 22 और 23 की ऐतिहासिकता का बचाव करने की कोशिश कर रहा है, जो 2 राजाओं 22 और 23 की ऐतिहासिकता पर सवाल उठा रहे हैं, और कहते हैं कि कुछ खत्म हो गया है -परिष्कृत संशयवाद. और वह कुछ और पृष्ठों तक इस पर चर्चा करता है। लेकिन वह कहते हैं, "इन सबके बावजूद, ऐसा प्रतीत होता है कि हमें कम से कम कुछ परंपरा के लिए एक ऐतिहासिक आधार अवश्य मानना चाहिए। निश्चित रूप से वे सभी पूरे कपड़े से निर्मित नहीं हैं। राजा योशियाह का सुधार अन्य लोगों की तुलना में बेहतर प्रमाणित प्रतीत होता है। संभाव्यता का संतुलन निश्चित

रूप से 2 किंग्स 22 की सामान्य ऐतिहासिकता के पक्ष में प्रतीत होता है। इस सिद्धांत का समर्थन करने के लिए 2 राजाओं 22 और 23 में ऐतिहासिकता के लिए तर्क देने की कोशिश करने वाले ऐसे व्यक्ति को ढूंढना वास्तव में दिलचस्प है, जबकि आम तौर पर विधि बिल्कुल विपरीत है। लेकिन आप देखिए कि यह मामले से क्यों संबंधित है। और उनमें से कुछ जो व्यवस्थाविवरण को बाद की तारीख में ले जाना चाहते हैं, वे 2 राजाओं 22 और 23 की ऐतिहासिकता को चुनौती देते हैं।

तो यह मूल वेलहाउजेन स्थिति है; मुझे लगता है कि मैंने सामान्य सिद्धांत के बारे में काफी कुछ कहा है। डाहल का तर्क है कि इजरायली साहित्यिक/धार्मिक विकास के इस संदर्भ में व्यवस्थाविवरण को रखने के लिए प्रचुर स्वतंत्र साक्ष्य मौजूद हैं। वह हमें यह समझाने की कोशिश करते हैं कि उनके निष्कर्ष ऐतिहासिक साक्ष्यों पर आधारित हैं।

2. धर्मों के योगदान का इतिहास

लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह वैसा है; मुझे लगता है कि यह लंबे समय से, अब एक सदी से चला आ रहा दृष्टिकोण है, कि इज़राइल का धर्म एक विकासवादी पैटर्न में विकसित हुआ, जैसे कि अन्यत्र धर्मों का विकास हुआ माना जाता है, और जब आप पेंटाटेच को देखते हैं और आप इन शानदार, परिष्कृत ईश्वर अवधारणाओं को पाते हैं, यानी उत्पत्ति 1, "आरंभ में, भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया," जो संभवतः इज़राइल की प्रारंभिक तिथि में अस्तित्व में नहीं हो सकता था। इतनी ऊंची ईश्वरीय अवधारणा कि आपको लगता है कि देर हो चुकी होगी। तो उत्पत्ति 1 पी है; यह निर्वासन में लिखा गया है। और मुझे लगता है कि चीजों की विकासवादी योजना ही इसका मूल है। वे इसे "धर्म के इतिहास" के दृष्टिकोण से देख रहे हैं, ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण पद्धति से इज़राइल के धार्मिक विकास के इतिहास का पुनर्निर्माण करने की कोशिश कर रहे हैं।

3. चमत्कार-विरोधी पूर्वाग्रह

वह ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण विधि, जिसके लिए वे प्रतिबद्ध हैं, एक ऐसी विधि है, जो शुरू से ही दैवीय हस्तक्षेप और उस प्रकार की चमत्कारी चीजों को बाहर कर देगी। दूसरे शब्दों में, ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण तरीकों को प्राकृतिक कारण और प्रभाव के माध्यम से, जो कुछ भी होता है,

उसे देखना और समझाने में सक्षम होना होगा। आपको इतिहास की सादृश्यता के साथ काम करना होगा। इसका मतलब यह है कि जब हम ऐसी घटनाओं को पढ़ते हैं जो हमारे अपने अनुभव का हिस्सा नहीं हैं, तो वे चीजें घटित नहीं हुईं। इतिहास की सादृश्यता इस बात पर नियंत्रण की तरह है कि आप दैवीय हस्तक्षेप और चमत्कारी चीजों को स्वीकार कर सकते हैं या नहीं। कार्यप्रणाली इस प्रकार स्थापित की गई है: जहां भी आप दैवीय हस्तक्षेप या चमत्कार पाते हैं, धारणा यह है कि हम जानते हैं कि वे चीजें नहीं होती हैं, इसलिए यदि आप उन्हें पाठ में पाते हैं, तो हम जानते हैं कि यह सच नहीं है और यह संभवतः पौराणिक है। तो आप देख सकते हैं कि यह उस तरह की प्राकृतिक पद्धति पर आधारित है और इसे ऐसी सामग्री पर थोपना है जो अपने स्वभाव से ही इस पद्धति से अलग है। लेकिन यह वैज्ञानिक माना जाता है।

मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम 10 मिनट का ब्रेक लें। और फिर हम "विभिन्न दिशाओं से वेलहाउजेन स्थिति के लिए चुनौतियाँ" पर आगे बढ़ेंगे। हम दूसरे घंटे में उस पर गौर करेंगे।

एमिली डेनब्लेकर द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया